CLASS X SUB HINDI

Topic - सूरदास के पद

सूरदास के पद : पाठ का सार

1- पद- ऊधौ, तुम हौ ..... ज्यौं पागी ॥

पहले पद में बताया गया है कि यदि उद्धव प्रेम के धागे में बँधे होते तो विरह की पीड़ा को अवश्य समझ सकते। उद्धव कैसे भाग्यशाली हैं जो कृष्ण के समीप रहते हुए प्रेम-बंधन में नहीं बँध सके। वे कमल पत्ते और तेल युक्त घड़े की तरह ही रहे - जिन पर पानी ठहरता ही नहीं। उन्होंने प्रेम नदी में अपना पैर तक नहीं डुबोया। हम ही ऐसी भोली अबला हैं जो न जाने क्यों प्रेम के बंधन में वैसी ही बँधी चली गई जैसे गुड़ से चीटियाँ चिपटती चली जाती हैं।

मन की मन ..... मरजादा न लही ॥

2. पद- दूसरे पद- में श्रीकृष्ण ने गोपियों के प्रति अपने प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त किया है। गोपियाँ किस प्रकार मन मसोस कर रह जाती हैं। गोपियाँ कहती हैं कि मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं। उनके आने की प्रतीक्षा में हम व्यथा को किस प्रकार सहन कर रही थीं। अब उनके द्वारा भेजे गए योग-साधना के संदेश ने हमारी पीड़ा को और बढ़ा दिया है। ऐसी दशा में कैसे धैर्य धारण किया जा सकता है?

3. पद- हमारैं हरि ..... जिनके मन चकरी ॥

तीसरे पद- में योग साधना के संदेश को कड़वी-ककड़ी के समान बताकर श्रीकृष्ण के प्रति अपने एकनिष्ठ

Scanned by CamScanner

प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट किया है। गोपियाँ हारिल की लकड़ी की तरह श्री-कृष्ण को छोड़ने में अपने आप को असमर्थ बताती हैं, वे कहती हैं कि श्रीकृष्ण के बिना जिया नहीं जा सकता। योग साधना का संदेश एक व्याधि की तरह कड़वी - ककड़ी जैसा लगता है। गोपियों के अनुसार योग की बातें उन्हीं के लिए उचित हो सकती हैं जिनका मन चकरी के समान चंचल अर्थात इधर-उधर भटकता रहता है।

हरि हैं - - - - - - - - - - - - न जाहिं सताए ॥

4. पद - चौथे पद में गोपियाँ उलाहना देती हैं कि श्रीकृष्ण तो पहले से ही चतुर और योग्य थे। उस पर भी अब राजनीति का पाठ पढ़ लिया है। इस विषय में गुरु से पढ़कर आए उद्धव और चतुर हो गए हैं। गोपियाँ फिर सावधान होकर राजधर्म को याद कराती हुई कहती हैं कि पहले लोग राजनीति में रहकर प्रजा का हित करते थे अब तो वे स्वयं ही अन्याय करने लगे हैं। राजधर्म के अनुसार प्रजा को सताना नहीं चाहिए। अर्थात श्री कृष्ण का आचरण अब प्रजा के अनुकूल नहीं है।

पाठान्तर्गत - प्रश्नोत्तर

प्रश्न - 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग निहित है ?

आदर्श उत्तर - गोपियाँ उद्धव को व्यंग करती हैं कि तुम्हारे भाग्य की कैसी विडम्बना है कि श्रीकृष्ण के निकट रहते हुए भी प्रेम से वंचित रहे। श्रीकृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रति

Scanned by CamScanner

अनुराग नहीं हुआ, वह तुम जैसा ही भाग्यवान हो सकता है। नहीं तो ऐसा कौन निष्ठुर पाषाण हृदय होगा, जिसके मन में कृष्ण के पास रहकर अनुराग उत्पन्न न हो। इस तरह गोपियाँ उनको भाग्यवान कहकर यही व्यंग करती हैं कि तुमसे बढ़कर दुर्भाग्य और किसका हो सकता है?

प्रश्न-2: उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

आदर्श उत्तर- उद्धव के व्यवहार की पहली तुलना ऐसे कमल-पत्र से की गई है जो पानी में रहते हुए भी पानी से गीला नहीं होता। उद्धव की दूसरी तुलना तेल से युक्त ऐसे घड़े से की गई है जो शीतल जल में डुबोने पर भी पानी से नहीं भीगता।

अभ्यास-पत्रक

विद्यार्थी 'क्षितिज' पुस्तक के इस पाठ को विस्तार से पढ़कर निम्नलिखित अभ्यास प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखें :-

प्रश्न-1: गोपियों की कौन सी अभिलाषा मन की मन में रह गयी?

2. योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा?

3. गोपियाँ अपनी तुलना हारिल पक्षी से क्यों करती हैं?

4. गोपियों ने योग की आवश्यकता कैसे लोगों के लिए बताई है?

Scanned by CamScanner

5. पुराने लोगों को भला बताकर गोपियाँ क्या बताना चाहती हैं ?

6. श्रीकृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है, ऐसा गोपियों ने कैसे जान लिया ?

7. उद्धव गोपियों की मनोदशा को क्यों नहीं समझ सके ?

8. गोपियों के अनुसार "सच्चा राजधर्म क्या है?"

× — ×

Scanned by CamScanner